आधुनिक निगमों या कम्पनियों के क्रियाकलापों में एक महत्वपूर्ण विशेषता विलयन, सम्मिश्रण और अधिग्रहण की प्रक्रिया है जिससे उत्पादन प्रक्रियाओं को संघनित किया जा सके, प्रतियोगिता को दूर किया जा सके और वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ किया जा सके। 1 अप्रैल, 1995 से पूर्व एकीकरण से सम्बन्धित लेखांकन प्रक्रियाओं को तीन विभिन्न पहलुओं के आधार पर किया जाता था जिन्हें कम्पनियों का एकीकरण, संविलयन और पुनर्निर्माण कहा जाता था। एकीकरण के सम्बन्ध में वर्तमान अवधारणा का अध्ययन करने से पूर्व यह आवश्यक होगा कि इन तीन पहलुओं के परम्परागत अर्थ को समझ लिया जाए।

एकीकरण (Amalgamation)—जब दो या अधिक कम्पनियां समापन में जाती हैं और इनके व्यवसायों को लेने के लिए नई कम्पनी समामेलित की जाती है, तो इसे एकीकरण कहा जाता है। उदाहरण के लिए, A Ltd. और B Ltd.—जो विद्यमान कम्पनियां हैं, के लिए व्यवसायों को लेने के लिए C Ltd. का निर्माण किया जाता है तो यह एकीकरण का उदाहरण है।

संविलयन (Absorption)—इस दशा में कोई **नई** कम्पनी निर्मित नहीं की जाती, वरन् एक विद्यमान कम्पनी अन्य कम्पनी या कम्पनियों को क्रय करके अपने में मिला लेती है तो इसे संविलयन कहा जाता है। उदाहरण के लिए, एक विद्यमान कम्पनी A Ltd. द्वारा B Ltd. के व्यापार को ले लिया जाता है तो यह संविलयन कहा जाएगा।

पुनर्निर्माण* (Reconstruction)—यह एक विद्यमान कम्पनी की पुनर्संरचना की स्थिति होती है, जो आन्तरिक या बाहरी हो सकती है।

Scanned by CamScanner

लेखा प्रमाप 14 (AS-14) में कुछ विशिष्ट शब्दों को विशिष्ट प्रकार से परिभाषित किया गया है। कुछ शब्दों की परिभाषा इस प्रकार है :

(1) **एकीकरण (Amalgamation)**—एकीकरण का तात्पर्य कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत होने वाले एकीकरण से है। कम्पनियों पर लागू होने वाले अन्य किसी नियमों के अन्तर्गत होने वाले एकीकरण से है। अर्थात् जब दो या दो से अधिक कम्पनियाँ आपस में मिलने का निश्चय करती हैं तब इसे एकीकरण कहा जाता है।

(2) **हस्तान्तरक कम्पनी (Transferor Company)**—हस्तान्तरक कम्पनी का तात्पर्य उस कम्पनी से है जिसका एकीकरण किसी दूसरी कम्पनी में होता है। लेखा प्रमाप 14 लागू होने के पूर्व इसे विक्रेता कम्पनी के रूप में जाना जाता था।

(3) **हस्तान्तरी कम्पनी (Transferee Company)**—हस्तान्तरी कम्पनी का तात्पर्य उस कम्पनी से है जिसमें हस्तान्तरक कम्पनी का एकीकरण होता है। लेखा प्रमाप 14 लागू होने के पूर्व इसे क्रेता कम्पनी के रूप में जाना जाता था।

(4) **संचय (Reserve)**—संचय का तात्पर्य उस राशि से है जो प्रबन्धकों द्वारा उपक्रम की अर्जित आय, प्राप्तियों या अन्य आधिक्यों (जो या तो पूँजीगत हों या आयगत) में से किसी सामान्य या विशेष उद्देश्य के लिए बनाये जाते हैं, परन्तु इसमें वह या सम्पत्तियों के अवमूल्यन या किसी ज्ञात दायित्व हेतु किया गया संचय शामिल नहीं है।

(5) **प्रतिफल (Consideration)**—एकीकरण के सम्बन्ध में प्रतिफल का तात्पर्य हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों को अंशों एवं अन्य प्रतिभूतियों एवं अन्य सम्पत्तियों तथा नकद के रूप में किये जाने वाले भुगतान से है।

(6) **उचित मूल्य (Fair Value)**—उचित मूल्य का तात्पर्य सम्पत्तियों के उस मूल्य से है जिस पर सम्पत्ति का विनिमय एवं विक्रेता की जानकारी के मुताबिक हो सकता है।

Scanned by CamScanner

एकीकरण के गुण उद्देश्य

(MERITS/OBJECTIVES OF AMALGAMATION)

एकीकरण के निम्न लाभ हैं :

(1) **प्रतिस्पर्धा में कमी**—एकीकरण के कारण कम्पनियों के मध्य होने वाली आपसी प्रतिस्पर्धा में कमी आ जाती है, और व्यवसाय में लाभ कमाने की क्षमता में वृद्धि हो जाती है।

(2) **बड़े पैमाने पर उत्पादन**—एकीकरण के कारण व्यवसाय में उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है क्योंकि इससे व्यवसाय का आकार बढ़ जाता है। उत्पत्ति के साधन का शोषण उपयोग होने के कारण उत्पादन लागत में कमी आती है।

(3) **व्ययों में कमी**—एकीकरण के कारण व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक प्रकार के व्ययों में कमी आती है। एकीकरण के कारण क्रय एवं संचालन कार्यों में सुगमता एवं सरलता के कारण अपव्ययों में कमी आ जाती है।

(4) **पूंजी में वृद्धि**—एकीकरण के कारण कम्पनियों की पूंजी में पहले की अपेक्षा मात्रा बढ़ जाती है और उन्हें अधिक मात्रा में पूंजी प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होती है।

(5) **प्रबन्ध एवं नियन्त्रण**—एकीकरण के कारण कम्पनियों को कई कुशल कर्मचारी भी प्राप्त होते हैं जो अपने अनुभव के द्वारा एकीकृत कम्पनी को अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से चलाने में सहायक होते हैं। नीतियों का निर्माण एवं उनका क्रियान्वयन अधिक प्रभावी हो जाता है।

(6) **विशेषज्ञों की सुविधा**—एकीकरण के द्वारा विशेषज्ञों की सेवाएं प्राप्त करना आसान हो जाता है क्योंकि ये कम्पनियां एकीकरण के पश्चात् पूंजी की उपलब्धता के कारण विशेषज्ञों को नियुक्त कर सकती हैं।

(7) **वितरण में सुविधा**—एकीकरण के पश्चात् उत्पाद का वितरण सुविधाजनक हो जाता है क्योंकि एकीकरण के पश्चात् कम्पनियों को पृथक् वितरण केन्द्र की आवश्यकता नहीं होती है।

(8) **बाजार पर नियन्त्रण**—एकीकरण के कारण एकीकृत कम्पनियां बाजारी स्थिति पर अपना नियन्त्रण रखने में सफल होती हैं क्योंकि वे उत्पाद की पूर्ति को बड़ी मात्रा में प्रभावित करने में सफल हो जाती हैं।

एकीकरण के दोष

(DEMERITS OF AMALGAMATION)

एकीकरण के निम्न दोष हैं :

(1) **प्रबन्धकीय समस्याएं**—एकीकरण के कारण कम्पनियों का आकार बढ़ जाता है। इस कारण एक बड़ी औद्योगिक कम्पनी को सीमित प्रबन्धकीय क्षमता के कारण उसे सफलतापूर्वक चलाना सम्भव नहीं होता है।

(2) **असहयोग**—कम्पनियों का एकीकरण के कारण एक से अधिक कम्पनियों के प्रबन्धकों को मिलकर कार्य करना पड़ता है। अतः जब तक प्रबन्धकों में आपसी सहयोग की भावना नहीं होगी तब तक व्यवसाय को सफलतापूर्वक नहीं चलाया जा सकता। असहयोग के कारण व्यवसाय की प्रगति में भी बाधा होती है।

(3) **मूल्य में वृद्धि**—एकीकरण के कारण प्रतियोगिता में कमी तो आती है, परन्तु यह पद्धति एकाधिकार को भी प्रेरित करती है। इस प्रकार की व्यवस्था से यदि कोई संस्था एकाधिकार की दशा प्राप्त करती है तो वह संस्था ग्राहकों से अपने उत्पाद का बढ़ा हुआ मूल्य वसूल कर सकती है।

(4) **पूर्ति पर नियन्त्रण**—एकीकृत संस्थाएं वस्तु की पूर्ति में कमी दिखाकर ग्राहकों को उत्पीड़ित कर सकती हैं। इस प्रकार उत्पाद में कमी करके ग्राहकों को परेशान किया जा सकता है।

(5) **अति-पूंजीकरण**—एकीकरण के कारण व्यवसाय की कुल पूंजी में वृद्धि हो जाती है तथा कुछ व्ययों में कमी हो जाती है और इस कारण कुल कोष का प्रयोग सम्भव नहीं हो पाता है। इस कारण अति पूंजीकरण की समस्या उत्पन्न हो सकती है जिस पर नियन्त्रण करना सम्भव नहीं हो पाता।

(6) **छोटे व्यवसायी को नुकसान**—एकीकरण के कारण एकीकृत कम्पनियां अपने व्ययों पर व बाजार पर नियन्त्रण स्थापित करने में सफल हो जाती हैं और इस कारण छोटे व्यवसायियों को इन बड़ी कम्पनियों से प्रतिस्पर्द्धा करने में कठिनाई का अनुभव होता है।

(7) **बड़े पैमाने पर उत्पादन की कठिनाई**—एकीकृत कम्पनियों को बड़े पैमाने पर भी उत्पादन करने में कठिनाई उत्पन्न होती है क्योंकि उन्हें बड़े पैमाने पर उत्पादन करने हेतु श्रम, वितरण, कर आदि की समस्या उत्पन्न होती है।

Scanned by CamScanner